कुमार जीवन - 76

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ गवर्मेन्ट तो कहती है, बस दो चार लाख बन जाएं तो भी ठीक है। बापदादा कहते हैं - **यह ब्राह्मण यूथ एक-एक लाख के समान हैं। इतने मजबूत हैं।** हैं? देखो, ऐसे नहीं घर जाकर फिर लिख दो बाबा माया आ गई, संस्कार आ गया, समस्या आ गई। समस्याओं के समाधान स्वरूप बनो। समस्यायें तो आयेंगी लेकिन अपने से पूछो मैं कौन? समाधान स्वरूप हूँ या समस्या से हार खाने वाला हूँ? आप सबका टाइटल क्या है - विजयी रत्न या हार खाने वाले रत्न? विजयी रत्न हैं। **ब्राह्मण जन्म होते ही बापदादा ने हर ब्राह्मण के मस्तक में विजय का तिलक अमर लगा दिया। तो अमरभव के वरदानी हो।** अभी यह अपने से वायदा करो, ऐसे तो वायदा कहलायेंगे तो सब कर लेंगे लेकिन अपने **मन** में **अपने से वायदा करो कभी भी संस्कार के वश नहीं होंगे जो बाप के संस्कार वह मुझ ब्राह्मण आत्मा के संस्कार।** जो द्वापर, कलियुग के संस्कार हैं वह मेरे संस्कार नहीं क्योंकि बाप के संस्कार नहीं। यह तमोगुणी संस्कार ब्राह्मणों के संस्कार हैं? नहीं है ना! तो आप कौन हो? ब्राह्मण हो ना! (03-02-2002)

➢➢ समाधान स्वरुप हो जाना

➳ _ ➳ जीवन में असंख्य समस्याएं हैं... एक समस्या आएगी .. दूसरी जायेगी

→ सभी समस्याओं का हम अलग अलग समाधान नहीं कर सकते

- सभी समस्याओं का एक ही समाधान है :-
  - ▶ साक्षी ही अशरीरी अवस्था में स्थित हो जाना

➳ _ ➳ बीमारियाँ अलग अलग है

→ पर स्वास्थ्य एक ही है :-

- शरीर की विस्मृति हो जाना अर्थात स्वास्थ्य
- देह की स्मृति अर्थात बीमारी

➳ _ ➳ समाधान स्वरुप आत्माएं सदैव तीव्र पुरुषार्थ में व्यस्त रहती हैं

→ और समस्या स्वरुप आत्माएं सदैव परचिन्तन में व्यस्त रहती हैं

➳ _ ➳ किसी भी विघन / समस्या में बेचैनी की आदत न बनाओ

→ क्योंकि वो विघन समस्या तो एक दिन चली जाएगी

- पर वो बेचैनी का संस्कार कायम रहेगा

→ अपनी ही दौड़ को साक्षी होकर देखिये की

- आप किस दिशा में भाग रहे हैं ?

➳ _ ➳ आपको अपने सेण्टर को बड़ा बनाने का लक्ष्य नहीं रखना है

→ आपको अपनी स्थिति को बड़ा बनाने का लक्ष्य रखना है